विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 3 अंक : 10 जून , 2010

अमेरिका में उठी हिंदी की आवाज़

डॉ. सुरेश अवस्थी

स्वागतम्

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के नए सदस्य

डॉ. अरविन बुलेल

डॉ. बसंत कुमार बनवारी

श्री मुकेश्वर चुनी

मॉरीशस गणराज्य का 9वाँ आम चुनाव 5मई, 2010 को संपन्न हुआ। चुनाव के बाद नए मंत्रिमंडल का गठन 11 मई, 2010 को किया गया। नए मंत्रिमंडल में शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय का कार्यभार माननीय डॉ. बसंत कुमार बनवारी; विदेश, स्थानीय सहकारिता एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्रालय का कार्यभार डॉ. अरविन बुलेल तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय का कार्यभार माननीय श्री मुकेश्वर चुनी को सौंपा गया है।

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद में शिक्षा, संस्कृति एवं विदेश मंत्रालय के माननीय मंत्रीगण सदस्य होते हैं। अतः शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. बसंत कुमार बनवारी; विदेश, स्थानीय सहकारिता एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री डॉ. अरविन बुलेल तथा कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी शासी परिषद के माननीय सदस्य होंगे। पिछले मंत्रिमंडल में भी डॉ. बसंत कुमार बनवारी और डॉ. अरविन बुलेल विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य रह चुके हैं। नवगठित मंत्रिमंडल में शामिल कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय मुकेश्वर चुनी इससे पहले भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त थे।

विश्व हिंदी सचिवालय शासी परिषद के माननीय सदस्यों डॉ. बसंत कुमार बनवारी, डॉ. अरविन बुलेल तथा श्री मुकेश्वर चुनी का हार्दिक स्वागत करता है।..

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषाओं की सूची में शामिल कराने की आवाज़, इस बार भारत से नहीं अमेरिका से उठी है। अखिल विश्व हिंदी समिति द्वारा न्यूयॉर्क में आयोजित 'विज्ञान, तकनीकी एवं राष्ट्रभाषा हिंदी' विषयक सेमिनार में विद्वानों ने हिंदी को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ दुनिया भर की भाषा बनाने का संकल्प लेकर इस बार भारत सरकार से पुरजोर प्रयास करने का आग्रह किया है।

भारत सरकार से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता-प्राप्त भाषाओं की सूची में सम्मिलित कराने से संबंधित सेमिनार में पारित प्रस्ताव में कहा गया कि विश्वविद्यालयों में विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्यों को पहुंचाया जाए, हिंदी में पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराकर तकनीकी व प्रौद्योगिकी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने की योजना बनाई जाए। सेमिनार में बड़ी संख्या में आए प्रवासी भारतीयों ने संकल्प लिया कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर मुख्यधारा में लाने के लिए प्रयास कर दुनिया भर में लोगों को जोड़ा जाएगा।

पद्मश्री डॉ. जयरामन की अध्यक्षता में हुए सेमिनार में अखिल विश्व हिंदी समिति के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. दाऊजी गुप्त ने कहा कि भारतीय संविधान में प्रदत्त अधिकारों तथा अपने ध्वन्यात्मक गुण के कारण हिंदी विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के लिए समर्थ एवं पूर्ण समृद्ध भाषा है।

कार्डियक सर्जन डॉ. फणिभूषण दास तथा कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. विजय कुमार मेहता ने चिकित्सा विज्ञान पर मौलिक ग्रंथ लेखन का संकल्प लिया। समारोह में सामाजिक व सांस्कृतिक सेवाओं के लिए उच्च तकनीक के सफल उद्योगपति डॉ. विष्णु दयाल को 'भारतीय समाज शिरोमणि सम्मान' प्रदान किया गया।..

('जागरण' से साभार)

हंगरी में हिंदी

डॉ. मारिया न्यजैशी

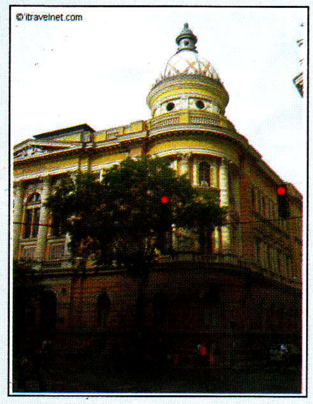

हंगरी, मेरा देश यूरोप में छोटा माना जाता है। यहाँ एक करोड़ लोग रहते हैं। हमारी राजधानी बुदापैश्त है जिसकी जनसंख्या 20 लाख है। हंगरी में प्रवासी भारतीयों की संख्या दो-एक सौ ही होगी।

मैं अदनी सी हिंदी प्रेमी हूँ। मैं यूरोप के उस देश से हूँ जहाँ आज से 20-25 साल पहले लोग हिंदी के नाम से केवल इस रूप में परिचित थे कि यह भारत की अनेक भाषाओं में से एक है। पर मैं यह कहने में गर्व महसूस करती हूँ कि आज यह स्थिति बहुत बदल गई है। आज दो-ढाई हज़ार से भी अधिक हंगेरियन लोग थोड़ी बहुत हिंदी समझ लेते हैं। लगभग सौ हंगेरियन लोग तो ऐसे हैं जो अच्छी तरह से हिंदी में बातचीत कर लेते हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि हिंदी एक विशाल सागर है और मैं और मेरा देश उसकी छोटी सी बूँद । क्या सागर है यह ! कितना सुंदर और सजीव, कितना गहरा और अनंत ! विश्व भर में असंख्य लोग हैं जो हिंदी समझते और बोलते हैं तथा ये हिंदी बोलनेवाले, उसकी विविधतापूर्ण शब्दावली, मुहावरे और कहावतें आदि मिलकर यह सागर बनाते हैं!

बुदापैश्त में हिंदी अध्ययन-अध्यापन के दो ही केंद्र हैं - ओत्वोश लौरेंद विश्वविद्यालय का भारोपीय अध्ययन विभाग तथा भारतीय राजदूतावास और इसी विभाग द्वारा आयोजित हिंदी कोर्स। सन् 1635 में स्थापित ओत्वोश लौरेंद विश्वविद्यालय के दर्शन संकाय के अंतर्गत सन् 1873 में 'भारोपीय अध्ययन विभाग ' की स्थापना की गई थी। इसका उद्देश्य भारोपीय तुलनात्मक भाषाविज्ञान का अध्ययन करना था। इसी विभाग में सन् 1956 में भारतविद्या अध्ययन एक प्रमुख विषय के रूप में शामिल किया गया। विभाग के छात्र हिंदी भाषा और व्याकरण दो साल पढ़ने के बाद तीसरे वर्ष से हिंदी साहित्य का अध्ययन करते हैं। छात्र आधुनिक कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी और मध्यकालीन कविता आदि में से अपनी रुचि के विषय चुनकर उनका अध्ययन कर सकते हैं। इसके अलावा हिंदी भाषा की विभिन्न शैलियों, प्रयुक्तियों व बोलियों आदि से भी उन्हें परिचित करवाया जाता है। कंप्यूटर और इंटरनेट के आ जाने के बाद से उस पर उपलब्ध दृश्य-श्रव्य सामग्री का और फिल्मों तथा फिल्मी गीतों का प्रयोग हिंदी अध्यापन के लिए किया जाता है ताकि वे सभी तरह की हिंदी से परिचित हो सकें।

मार्च, 2002 में हंगरी में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसके बाद वर्ष 2007 में भी हिंदी अध्ययन-अध्यापन के विषय में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

हंगरी में हिंदी भाषा के अध्यापन को यदि अध्येताओं की दृष्टि से देखें तो यह उनके लिए रोज़ी-रोटी का साधन बिल्कुल भी नहीं है। यह भारत के प्रति उनका प्रेम, श्रद्धा और उत्सुकता ही है जो उन्हें हिंदी पढ़ने को प्रेरित करती है। बुदापैश्त में भारतीय दूतावास के सहयोग से तीन स्तरों पर हिंदी अध्यापन की नियमित कक्षाएँ चलती हैं। इनके अलावा भारतीय संस्कृति और समाज की विभिन्न विशेषताओं पर आधारित विशेष व्याख्यानमाला का भी प्रत्येक सत्र में आयोजन किया जाता है। पिछले 18 वर्षों से चल रही हिंदी कक्षाओं में लगभग 2000 लोग हिंदी के साथ-साथ भारत और भारतीय संस्कृति से परिचय प्राप्त कर चुके हैं। उक्त व्याख्यानमाला में भारतीय व हंगेरियन भारतविद् भारतीय संस्कृति से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चापरक व्याख्यान देते हैं।

मैं विश्वविद्यालय में प्राचीन भाषाएँ पढ़ती थी : संस्कृत, प्राचीन यूनानी तथा लैटिन। हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के साथ ही मेरे लिए एक नई खिड़की खुली और मैं न केवल भारतीय परंतु अन्य अनेक संस्कृतियों से भी परिचित हो गई। मैं तो हिंदी को बहुत ही धन्यवाद देती हूँ कि इसके कारण ही मुझे विश्व भ्रमण करने का अवसर मिला।

अंतर्राष्ट्रीय भाषाएँ एकाधिक राष्ट्र के विभिन्न भाषा-भाषियों में परस्पर संपर्क तथा वैचारिक आदान प्रदान का आधार होती हैं। दुनिया कभी भी एक समान नहीं रहती न ही भाषाएँ भी। आप तो जानते ही है जब कोई भाषा स्थिर हो जाती है या उसका विकास रुक जाता है तो हमलोग उसे मृत भाषा मान लेते हैं। हिंदी अपने अस्तित्व के समय से निरंतर बदलती रही है, कभी संस्कृतियों के मेल-मिलाप के कारण तो कभी इसके प्रयोक्ताओं के प्रयासों से। यह तेज़ी से नई तकनीकी के लिए अपने आपको उपयुक्त बना लेती है। यही कारण है कि अब इसका प्रयोग कंप्यूटर में तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। हिंदी अन्य भाषाओं के शब्दों को अपने विराट कलेवर में समाती चलती है और नए शब्द भी गढ़ती रहती है। इस कारण से कंप्यूटर इंटरनेट आदि पर प्रयुक्त एक नया भाषारूप भी सामने आ रहा है।

मेरा सुझाव है कि विश्व हिंदी सचिवालय को विदेशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण कर रही संस्थाओं के अध्यापकों के हिंदी प्रशिक्षण का कार्य भी अपने जिम्मे ले लेना चाहिए, या किसी भारतीय संस्थान से जुड़कर इस तरह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए।

आईसीसीआर को हिंदी शिक्षण के लिए कुछ और पीठ प्रारंभ करनी चाहिए और पीठ पर काम करनेवाले अध्यापकों को और अधिक सुविधाएँ देनी चाहिए। साथ ही ऐसे अध्यापकों को इन पीठों के लिए चुनना चाहिए जो भाषा अध्यापन पर अधिक ध्यान देते हों।

इसी तरह मेरा सुझाव है कि विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का शिक्षण कर रही संस्थाओं को अपने मंडल आदि में हिंदी के विदेशी अध्यापकों को भी स्थान देना चाहिए ताकि वे अपनी समस्याओं से उन्हें अवगत करवा सकें। ••

डॉ. रामनिवास 'मानव' अनूठे संग्राहक

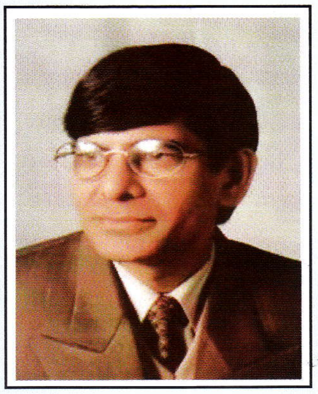

सबके अपने-अपने शौक़ होते हैं- किसी की सिक्के एकत्रित करने में रुचि होती है, तो कोई पुरानी वस्तुओं का संग्रह करने का शौक़ीन होता है। कई लोगों के पास डाक-टिकटों, निमंत्रण-पत्रों तथा ताश की गड्डियों के संग्रह भी उपलब्ध हैं। ऐसे ही लोगों की सूची में शामिल हैं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामनिवास 'मानव', जिनके निजी पुस्तकालय में लाखों रुपये मूल्य की महत्वपूर्ण पुस्तकें तो उपलब्ध हैं ही, उनके पास दस हज़ार पत्र-पत्रिकाओं का अनूठा संग्रह भी है। डॉ. 'मानव' विगत पैंतीस वर्षों से यह संग्रह करते चले आ रहे हैं।

एक मुलाक़ात में डॉ.'मानव' ने बताया कि उनके पास प्रतिमास देश-विदेश की लगभग सौ पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। पिछले पैंतीस-चालीस वर्षों में उनके पास जितनी भी पत्र-पत्रिकाएँ आई हैं, उनमें से लगभग सभी एक-एक, दो-दो प्रतियाँ उनके पास सुरक्षित हैं। इनके अतिरिक्त हस्तलिखित, फ़ोटोस्टेट की हुई, पोस्टकार्ड पर निकलने वाली, गुटका साइज़ और डिमाई साइज़ से लेकर समाचार-पत्र साइज़ में निकलने वाली पत्रिकाओं के साथ-साथ अनेक पत्रिकाओं के भारी-भरकम विशेषांक भी उनके पास उपलब्ध हैं।

संगृहीत पत्र-पत्रिकाओं के महत्व को स्पष्ट करते हुए डॉ. 'मानव' ने बताया कि उनके पास उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं में से लगभग नब्बे प्रतिशत बंद हो चुकी हैं तथा अब उनके अंक ढूंढ़ पाना किसी के लिए भी कठिन नहीं, असंभव है। ऐसे में पत्रकारिता पर शोध-कार्य करने वाले शोध-छात्रों के लिए उनका यह संग्रह अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। एक दशक पूर्व एक स्थानीय महाविद्यालय में इन पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी लगा चुके डॉ. 'मानव' अब इन पत्र-पत्रिकाओं को किसी विश्वविद्यालय के पत्रकारिता-विभाग को भेंट करना चाहते हैं, ताकि वहाँ यह दुर्लभ निधि सुरक्षित रह सके तथा अधिकाधिक शोधार्थी इसका लाभ उठा सकें।

उल्लेखनीय है कि विगत तीन दशकों से सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े तथा पत्रकारिता के लिए 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी पत्रकारिता-पुरस्कार' से पुरस्कृत डॉ. 'मानव' हरियाणा ही नहीं, संभवत: संपूर्ण भारत के एकमात्र ऐसे पत्रकार हैं, जिनके प्रकाशन-संपादन में, हिसार से प्रकाशित होने वाले सांध्य दैनिक 'नित्य हलचल' पर, 'हरियाणा की पत्रकारिता के विकास में नित्य हलचल की भूमिका' शीर्षक से, वर्ष-2007 में, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै (त. ना.) से एम. फ़िल भी हो चुकी है। ••

साभार : सृजनगाथा

दिव्या माथुर को डॉ. हरिवंश राय बच्चन लेखन सम्मान

बाएँ से भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री नलिन सूरी, दिव्या माथुर, एम ए टी वी के प्रतिनिधि और मंत्री (समन्वय) इब्राहिम आसिफ़

17 मार्च, 2010 को भारत भवन, लंदन में आयोजित एक विशेष समारोह में भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री नलिन सूरी ने दिव्या माथुर को डॉ. हरिवंश राय बच्चन लेखन सम्मान (यू.के. का सर्वश्रेष्ठ हिंदी साहित्यकार) से सम्मानित किया।

दिव्या माथुर 1985 में भारतीय उच्चायोग से जुड़ीं और 1992 से नेहरू केंद्र में वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

रॉयल सोसाइटी ऑफ़ आर्ट्स की फ़ेलो, वातायन : साउथ बैंक पर कविता की संस्थापिका, आशा फ़ाउंडेशन और पेन संस्थाओं की संस्थापक सदस्या, यू.के. हिंदी समिति की उपाध्यक्ष, कथा यू.के की पूर्व अध्यक्ष और 'प्रवासी टुडे' की प्रबंध संपादक दिव्या अन्य और कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादक मंडल में शामिल हैं, जैसे कि 'अक्षरम्', 'पुरवाई' और 'विश्व विवेक'। नेत्रहीनता से संबंधित कई संस्थाओं में इनका अभूतपूर्व योगदान रहा है। इसी विषय पर इनकी कहानियाँ और कविताएँ ब्रेल लिपि में प्रकाशित हो चुकी हैं।

दिव्या माथुर को विश्व हिंदी सचिवालय एवं समस्त हिंदी प्रेमियों की ओर से बधाई। ••

आदरणीय संपादक महोदय, 17 मई, 2010

'विश्व हिंदी समाचार' मार्च 10 अंक हस्तगत हुआ। धन्यवाद।

हिंदी की लोकप्रियता बढ़ रही है और इसे समृद्ध व व्यापक गति प्रदान करने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय सराहनीय कार्य कर रहा है, बधाई स्वीकारें। वैसे तो हिंदी भाषी सारी दुनिया में फैले हुए हैं परंतु अब इनकी जानकारी, भाषा के प्रति विश्व में हो रही गतिविधियों की जानकारी इस छोटे से पत्र से मिलना एक सुखद अनुभव देती है।

इस अंक में भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तथा संसद अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार और डॉ. कर्ण सिंह के साथ-साथ विश्व के अनेक जानेमाने नेताओं, साहित्यकारों और संस्थाओं की रिपोर्ट देकर आपने इस अंक को संग्रहणीय बनाया है।

विश्व हिंदी समाचार का तीसरे वर्ष में प्रवेश करने पर अनेकानेक शुभकामनाएँ।

चंद्र मौलेश्वर, 1-8-28, यशवंत भवन, अलवाल, सिकंदराबाद - 500 010, आं.प्र. (भारत)

परदेश में देश का रंग

फ़ज़ल इमाम मल्लिक

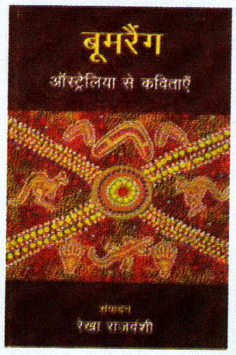

'बूमरैंग' आस्ट्रेलिया में रह रहे ग्यारह कवियों की कविताओं का संकलन है और इसे रेखा राजवंशी ने संपादित किया है। उनका सहयोग किया है सुभाष शर्मा और प्रेम माथुर ने। संग्रह में रेखा राजवंशी, सुभाष शर्मा और प्रेम माथुर की कविताएँ भी हैं। इनके अलावा संग्रह के दूसरे कवि हैं अब्बास रज़ा अलवी, राय कूकणा, रेनु शर्मा, अनिल वर्मा, किशोर नंगरानी, शैलजा चतुर्वेदी, हरिहर झा और नीरजा नीना बधवार। ग्यारह कवियों के इस संग्रह की बड़ी ख़ूबी यह है कि इसमें देश की मिट्टी की ख़ुशबू बिखरी पड़ी है। कविता पुस्तक का नाम 'बूमरैंग' रखने की वजह भी यही है। संग्रह में हर कवि की सात-आठ कविताएँ शामिल की गई हैं। कुछ कवियों की ज़्यादा कविताएँ भी हैं।

छंदों से इतर हटकर जो कविताएँ संग्रह में शामिल की गई हैं वह हमें ज़्यादा आश्वस्त करती हैं, शिल्प के स्तर पर भी और कथ्य के स्तर पर भी। हालांकि इन कविताओं में भी न तो नए मुहावरे बुने गए हैं और न ही कुछ ऐसा चमत्कारिक प्रयोग, लेकिन अपनी सादगी और साफ़गोई की वजह से ये हमें अपने संसार से जोड़ती हैं। हरिहर झा की 'न जाने क्यों', नीरजा नीना बधवार की 'फ़र्क', 'समुद्र मंथन', राय कूकण की 'स्वप्न सृजन', अनिल वर्मा की 'ग़लतफ़हमियाँ' और 'दर्पण' सरीखी कविताएँ संपूर्णता में अपना प्रभाव छोड़ती हैं। वैसे संग्रह में अब्बास रज़ा रिज़वी, सुभाष शर्मा और शैलजा चतुर्वेदी की कुछ कविताओं में छंद का अनुशासन है और इन कविताओं की रागात्मकता कहीं अंदर तक उतरती है। अब्बास की 'अपने देश का एक कवि', 'गांधी की आवाज़' जैसी कविताएँ अपनी मिट्टी से जोड़ती हैं। उनके गीत 'फिर ताज़ा हवा का यह झोंका सावन की याद दिलाता है/ शायद फिर तुमने याद किया चिट्ठी का रंग बदलता है' में देश पूरी शिद्दत के साथ दिखाई देता है। सुभाष शर्मा 'एक पल' और 'मेरी चिट्ठी' सरीखे गीतों से गंभीर कवि के तौर पर सामने आते हैं। किशोर नंगरानी हास्य-व्यंग्य के कवि हैं और उनकी अपनी सीमाएँ हैं। उनकी कविताओं में यह सीमा दिखती भी है। बावजूद इसके उनकी कविताओं में ताज़गी है। जिन दो कवियों ने वैयक्तिक तौर पर मुझे प्रभावित किया उनमें संग्रह की संपादक रेखा राजवंशी और प्रेम माथुर हैं। दोनों के पास एक व्यापक दृष्टि है। इनकी कविताओं में देश और समाज के साथ-साथ घर, बच्चे, पेड़, प्रकृति पूरी शिद्दत के साथ दिखाई पड़ते हैं।..

बूमरैंग, संपादक : रेखा राजवंशी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, भारत।

ख़ाली लिफाफा' का लोकार्पण

डॉ. वरूण कुमार तिवारी

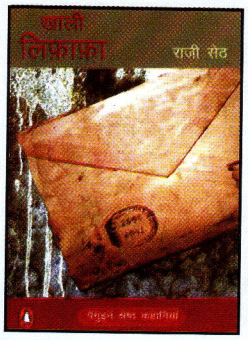

हिंदी की सुप्रसिद्ध कथाकार राजी सेठ के सद्यः प्रकाशित कहानी संग्रह 'ख़ाली लिफाफा' का लोकार्पण समारोह अक्षरम् द्वारा साहित्य अकादमी,नई दिल्ली के सभागार में आयोजित किया गया। पेंगुइन बुक्स प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस संग्रह में कुल पच्चीस कहानियाँ हैं। 'अंधे मोड़ से आगे' तथा 'तीसरी हथेली' इनके अन्य चर्चित कहानी संग्रह हैं। राजी सेठ ने पूरी गंभीरता और नई दृष्टि से घर-परिवार की कितनी अनजानी स्थितियों का मार्मिक चित्रण किया है। ये मानवीय संबंधों और मानव - मनोविज्ञान को केंद्र बनाकर अपने आस-पास की देखी-परखी जिंदगी को स्वाभाविक ढंग से चित्रित करती हैं। इनकी कहानियों में अत्यंत सहज रूप में भोगे हुए यथार्थ की अनुभूति उपस्थित है।

'ख़ाली लिफाफा' की हर कहानी जीवन का एक अलग चित्र प्रस्तुत करती है। ये चित्र बहुरंगी तो हैं ही, इनके रंग चुटीले तथा रेखाएं गहरी हैं।कहानियों में कथानक को संवेदनात्मक भाव-भूमि पर विस्तार मिला है। 'ख़ाली लिफाफा' संग्रह की तमाम कहानियां संत्रास, विषाद, अवसाद, उदासीनता के बावजूद जिजीविषा की लौ मद्धिम होने नहीं देतीं। विवरणात्मक होने के बावजूद ये कहानियां संवेदना के स्तर पर पाठक से संबंध स्थापित करती हैं।

'ख़ाली लिफाफा' की कहानियों के संदर्भ में यह तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि इन कहानियों की अंतश्चेतना में एक मानवीय संवेदना की तलाश अनुभव की जा सकती है। ये कहानियां सामाजिक परिवेश से तो जुड़ी ही हैं, ये परिवेश के उस टुकड़े , जिसे घर या परिवार कहा जाता है, को भी समग्रता से उद्घाटित करती हैं । जहां यथार्थ का प्रभावशाली चित्रण इनकी कहानियों की प्रमुख विशेषता है, वहीं अपने कथा-पात्रों की मनोदशा को गहराई से समझकर सूक्ष्मता से अंकित करने में भी राजी सेठ सफल रही हैं। कहानियों के पात्रों के व्यक्तित्व, क्रिया-कलाप,चिंतन और समस्याएं ऐसी हैं कि वे अपने ही बीच के जाने-पहचाने चेहरे जान पड़ते हैं। वास्तव में 'ख़ाली लिफाफा' की वास्तविक शक्ति इनके यथार्थ चित्रण तथा पात्रों की स्वाभाविकता में निहित है।

समग्रत :'ख़ाली लिफाफा' की कहानियां अपने सशक्त कथ्य, सूक्ष्म चरित्र विकास, मनोवैज्ञानिक संस्पर्श तथा परिष्कृत भाषा-शिल्प के कारण अत्यंत प्रभावी बन पड़ी हैं।..

अक्षरम् से साभार

महासचिव की ओर से

वैश्विक फलक हिंदी के प्रति जागरूकता

आज वैश्विक फलक पर हिंदी के प्रति अभूतपूर्व जागरूकता दिखाई दे रही है। न केवल भारत सरकार के विश्वव्यापी मिशन एवं दूतावास , बल्कि विदेशों में स्थित असंख्य स्वयंसेवी संस्थाओं ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कमर कस ली है। ये संस्थाएँ विश्व के कोने-कोने में हिंदी कवि-सम्मेलनों का आयोजन कराती हैं,विश्व हिंदी दिवस का आयोजन करती हैं, हिंदी सम्मेलनों व संगोष्ठियों का आयोजन करती हैं, हिंदी में पत्रिकाएँ और पुस्तकें प्रकाशित करती हैं, वेब के ज़रिये हिंदी पत्रिकाओं के नए-नए अंक पाठकों तक पहुँचाती हैं और इस तरह हिंदी की सेवा तन-मन-धन से कर रही हैं।

पिछले दिनों अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति (अमेरिका) ने अमेरिका के सोलह शहरों में एक महीने तक कवि सम्मेलनों का आयोजन किया। इसका आरंभ 9 अप्रैल,2010 को डैलस से हुआ। डैलस के अलावा मिडलैंड, हस्टन, अटलांटा, टोरंटो, बॉस्टन, वाशिंगटन, शिकागो, न्यूयॉर्क आदि में भी कवि सम्मेलन आयोजित किए गए।

न्यूयॉर्क में 'विज्ञान, तकनीकी एवं राष्ट्रभाषा हिंदी' विषय पर अखिल विश्व हिंदी समिति द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं की सूची में शामिल कराने की आवाज़ उठाई गई है। इस संगोष्ठी में बड़ी संख्या में भाग लेनेवाले प्रवासी भारतीयों ने संकल्प लिया कि हिंदी को वैश्विक स्तर पर मुख्यधारा में लाने के लिए विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों को जोड़ने का कार्य व्यापक स्तर पर किया जाएगा। इसी संगोष्ठी में कार्डियक सर्जन डॉ. फणिभूषण दास एवं कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. विजय कुमार मेहता द्वारा चिकित्सा विज्ञान पर हिंदी में मौलिक ग्रंथ लिखने का संकल्प लेना अन्य हिंदी प्रेमियों के लिए निश्चित ही अनुकरणीय है।

रेखा राजवंशी के संपादन में अस्ट्रेलिया में रहनेवाले ग्यारह कवियों की कविताएँ 'बूमरैंग' नामक कविता-संग्रह में प्रकाशित हुई हैं। विदेशों में रहनेवाले कवियों और कथाकारों का यह पहला संग्रह नहीं है। इससे पहले भी विदेशों में रहनेवाले हिंदी लेखकों की अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। ऐसे प्रकाशनों से विदेशों में रहनेवाले भारतीय एक-दूसरे से जुड़ते हैं, करीब आते हैं और अपनी भाषा एवं लिपि के प्रचार-प्रसार में सहायक होते हैं। आशा है, रेखा जी भविष्य में भी इसी तरह की अन्य पुस्तकें प्रकाशित कराने में अपना योगदान देती रहेंगी।

हंगरी में हिंदी की गतिविधियों के बारे में विश्व हिंदी समाचार के पिछले अंकों में कुछ न कुछ समाचार प्रकाशित होते रहे हैं। बुदापैश्त में विश्व हिंदी दिवस और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठियों के आयोजन संबंधी समाचार भी प्रकाशित हो चुके हैं। इस अंक में हंगरी में हिंदी की वर्तमान स्थिति पर कुछ सामग्री प्रकाशित की जा रही है। हाल ही में बुदापैश्त के ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय के भारोपीय विभाग द्वारा हिंदी की भित्ति पत्रिका 'प्रयास' के वेब-संस्करण के लोकार्पण की सूचना भी दी जा रही है। इस तरह एशिया,अमेरिका,अस्ट्रेलिया, यूरोप आदि महादेशों में हिंदी की मशाल लेकर चलनेवाले असंख्य हिंदी प्रेमियों की जागरूकता के कारण आज हिंदी का वैश्विक फलक निरंतर व्यापक होता जा रहा है।

हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए एक समन्वित प्रयास की आवश्यकता को ध्यान में रखकर विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्वव्यापी हिंदी लेखकों की एक 'निर्देशिका' बनाई जा रही है। सभी हिंदी लेखकों से अनुरोध है कि वे अपना नाम, पता, दूरभाष-मोबाइल एवं फैक्स संबंधी विवरण हमारे ई-मेल: whsmauritius@intnet.mu पर अविलंब भिजवाने की व्यवस्था करवाएँ जिससे कि हम ये सारी सूचनाएँ सचिवालय के वेबसाइट पर उपलब्ध करा सकें। इसके लिए हम आपके आभारी होंगे।••

(डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र)

संपादक
डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

संपादन सहयोग
जिष्णु होरिशरण, प्रीति सीयामबर,
विजया सरजु, श्रद्धांजलि हजगैबी

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस

World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu

'प्रयास' के वेब संस्करण का लोकार्पण

29 अप्रैल, 2010 को ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय के भारोपीय विभाग में हिंदी की भित्ति पत्रिका 'प्रयास' के वेब संस्करण का लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए 'अभिव्यक्ति' की संपादक पूर्णिमा वर्मन ने हंगरी में हिंदी के अध्ययन, अध्यापन और विकास के कार्यक्रमों की सराहना की। उन्होंने कहा कि वेब पर विश्वविद्यालयों की हिंदी पत्रिकाओं की उपस्थिति, विश्व भर के हिंदी छात्रों के विचार विनिमय, भाषा व साहित्य के संगठित विकास का महत्वपूर्ण सोपान है। उन्होंने 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' पत्रिकाओं के विषय में पावर पॉइंट प्रस्तुति द्वारा विस्तार से बताया।

श्रीमती पूर्णिमा वर्मन द्वारा टीम अभिव्यक्ति की ओर से विभाग की सर्वश्रेष्ठ छात्रा- सूच वैरोनिका को स्मृतिचिह्न, प्रशस्ति पत्र और नकद पुरस्कार दिया गया। पूर्णिमा जी ने छात्रों में हिंदी सीखने की लगन की प्रशंसा करते हुए उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं और विश्वास व्यक्त किया कि आगे भी इन छात्रों के द्वारा हिंदी में महत्वपूर्ण कार्य होते रहेंगे। इस अवसर पर विभाग की अध्यक्षा, डॉ. मारिया नेज्यैशी को भी टीम अभिव्यक्ति की ओर से प्रशस्ति पत्र देकर सम्मनित किया गया और हंगरी में हिंदी के लिए किए जा रहे उनके प्रयासों की सराहना की गई। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग के छात्र, अध्यापक, अनुवादक तथा अन्य हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विभाग के अतिथि प्रोफ़ेसर डॉ. प्रमोद शर्मा ने किया और हंगेरियन अनुवाद दानियल ने किया।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर 28 अप्रैल की शाम ऐल्ते के हिंदी छात्रों द्वारा हंगरी के प्रसिद्ध लेखक फैरैंस मोलनार के प्रसिद्ध किशोर उपन्यास 'पॉल उत्साई फ्यूक' के एक अंश का हिंदी नाट्य रूपांतर प्रस्तुत किया गया। 'पुटी क्लब' नाम से प्रस्तुत इस रचना का हिंदी नाट्य रूपांतर अतिथि प्रोफ़ेसर डॉ. प्रमोद शर्मा द्वारा किया गया। आकाश सैनी ने इसका निर्देशन किया। पात्रों के अभिनय और उनके हिंदी प्रेम ने पूर्णिमा वर्मन का मन मोह लिया।..

प्रस्तुति : डॉ गीता शर्मा, बुदापैश्त

साहित्य-संवाद : नारी और मीडिया

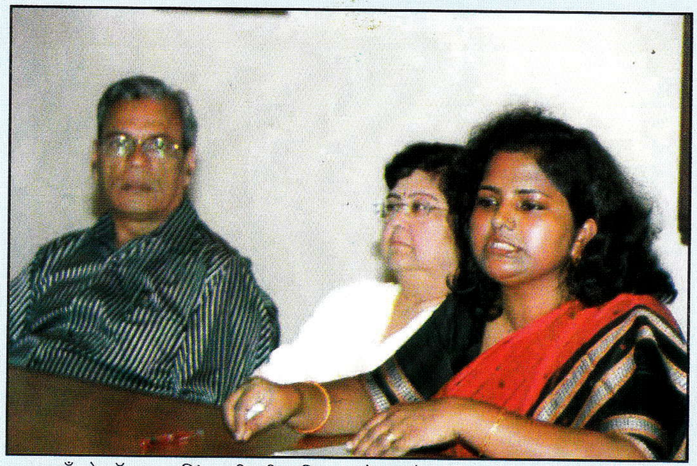

दाएँ से डॉ. सुधा सिंह, श्रीमती अनिता अरोड़ा और डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र

मॉरीशस के इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र में हर माह की तरह इस बार भी 'साहित्य-संवाद' की गोष्ठी आयोजित की गई। 15 मई, 2010 की इस गोष्ठी की प्रमुख वक्ता थीं डॉ. सुधा सिंह। गोष्ठी में अध्यक्ष पद पर थीं केंद्र निदेशिका श्रीमती अनिता अरोड़ा, कार्यक्रम संयोजिता- श्रीमती अंजु घरभरन तथा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ।

'बाज़ारवाद, भूमंडलीकरण और विज्ञापन में नारी का स्थान' विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रकट करते हुए, डॉ. सुधा सिंह ने श्रोताओं को बाँध लिया। डॉ. सुधा सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय, कला संकाय के हिंदी विभाग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं।

डॉ. सुधा सिंह ने कहा कि आज उत्पादक-श्रम के बाद जो अनुत्पादक-श्रम का बाज़ार खड़ा हो गया है, वही आज के बाज़ार की कीमत तय कर रहा है। वही ग्राहक तैयार कर रहा है। जूता बनाने वाला आज उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना जूता पहनकर उसका विज्ञापन करने वाला। वही उसकी मार्केटिंग का मूलाधार है। उन्होंने आगे कहा कि इस बाज़ारवाद के चलते नारी को देखने, परखने की दृष्टि भी कुछ वही उपभोक्ता वाली ही है। कपड़ों का, सौंदर्य-प्रसाधनों का, रसोईघर का, घर के पेंट का, सभी कुछ के बाज़ारीकरण में नारी को उपभोक्ता दिखाकर ही विशेष खरीदार वर्ग तैयार किया जा रहा है। एक विशेष बात की ओर उन्होंने संकेत किया कि नारी बड़ी ही तेज़ी से प्रगति कर रही है। वह आसमान की ऊंचाइयों को छू रही है, पर मीडिया आज भी उसकी गति को पकड़ नहीं पा रहा। आज भी विज्ञापनों में, बाज़ारवाद की सोच में उसका स्थान किंचन सौंदर्य प्रसाधनों के घेरे तक ही सीमित है। यह एक दोयम दर्जे की सोच है।

श्रीमती सीता रामयाद, डॉ. अंचराज, महिला कथाकार श्रीमती भानुमती नागदान एवं डॉ. हेमराज सुन्दर के प्रश्नों के उत्तर बड़े ही सुलझे हुए रूप से डॉ. सुधा सिंह ने दिए।..

प्रस्तुति : डॉ. (श्रीमती) अल्का धनपत, वरिष्ठ प्राध्यापिका, महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस।

एक मंच पर लाने का प्रयास

अनिल महेश्वरी

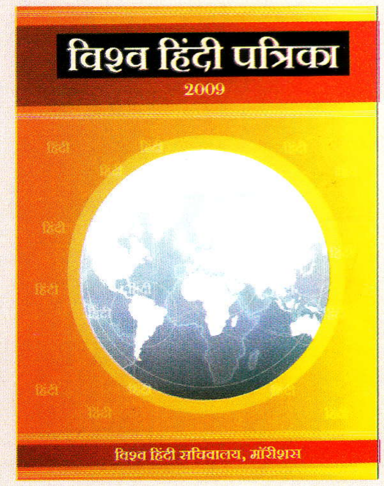

आज भारतवंशी बड़ी संख्या में विश्व के कोने-कोने में फैले हुए हैं। जहाँ पर भी वे हैं उन तमाम देशों में हिंदी का परचम लहरा रहा है। उनके कारण हिंदी निरंतर अपनी सीमाएँ विस्तृत कर रही है। हिंदी का विश्वव्यापी विस्तार उसे निश्चित रूप से विश्व की तीन बड़ी भाषाओं में स्थान देता है। जब भारत ने हिंदी को अपनी राष्ट्र भाषा घोषित कर दिया तब तो हिंदी के संगठित प्रचार-प्रसार के लिए किसी केंद्रीय व्यवस्था का अभाव सभी को खटकने लगा। हिंदी के विस्तृत होते विश्व परिदृश्य के कारण 1975 में ही विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना का विचार मॉरीशस के प्रधानमंत्री ने नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में प्रस्तुत किया। उन्होंने इस सचिवालय का मुख्यालय मॉरीशस में रखने की बात की थी। कालांतर में इस विचार को ठोस रूप प्रदान करने के लिए भारत और मॉरीशस की सरकारों के सहयोग से मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई।

विश्व हिंदी सचिवालय के सम्मुख एक विराट लक्ष्य है - हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित करके उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के कार्य को आगे तक बढ़ाना। इस लक्ष्य को सामने रखकर ही विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा 'विश्व हिंदी पत्रिका' का प्रकाशन किया गया है। इस पत्रिका के प्रथम अंक में ही ध्यान में रखा गया कि हिंदी के संवर्धन के लिए विश्व में जहाँ कहीं भी कोई कार्य हो रहा हो उसे इसमें स्थान दिया जाए। सचिवालय के अथक प्रयासों के फलस्वरूप 2009 में पहला अंक प्रकाशित हुआ है। इसमें विभिन्न देशों के 45 लेखकों के आलेखों को समाहित किया गया है। यह अंक विश्वव्यापी पाठकों को हिंदी की वैश्विक स्थिति के विषय में एक समेकित जानकारी देने में सक्षम है।

प्रवेशांक में शामिल किए गए सभी शोधपरक लेख आधिकारिक विद्वानों द्वारा लिखे गए हैं। अधिकांश लेख भारतीय मूल के विद्वानों द्वारा ही रचित हैं। 45 लेखों में से केवल 7 लेख ऐसे हैं जो भारतीयमूल के विद्वानों द्वारा नहीं लिखे गए। अच्छा होगा यदि अधिक से अधिक हिंदी के विदेशी विद्वानों को इस पत्रिका के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाए। विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा किया गया यह प्रयास स्वागत योग्य है। ••

गगनांचल मार्च-अप्रैल 2010 से साभार

अंडमान-निकोबार में रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती

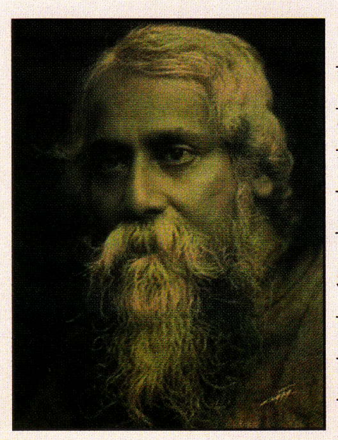

कवि रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जन्मशती पर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में वर्ष भर चलनेवाले भव्य समारोह का आगाज़ हुआ। अंडमान पीपुल थिएटर एसोसिएशन (आप्टा) द्वारा आयोजित इस 'कवि गुरु नमन' का उद्घाटन एंफी थिएटर के खुले रंगमंच पर अंडमान-निकोबार द्वीप समूह के डाक निदेशक एवं साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार यादव द्वारा एक भव्य समारोह में किया गया।

डाक निदेशक एवं साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार यादव ने इस अवसर पर कहा कि रवींद्रनाथ टैगोर जैसा व्यक्तित्व किसी समाज या किसी देश की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता,ऐसे व्यक्तित्व समूची मानवता के थाती होते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर न केवल कवि, साहित्यकार, संगीतकार, चित्रकार इत्यादि थे बल्कि वे मानवता के अग्रणी पोषक भी थे। एक जमींदार घराने से होते हुए भी उन्होंने ग्रामीण किसानों के लिए कार्य किया। वह पहले कवि थे, जिन्होंने प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार से सम्मनित होकर भारत को पहला नोबेल तो दिलवाया ही, पराधीन भारत के आहत स्वाभिमान को एक बार फिर सिर उठाने का अवसर दिया। श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि मात्र सात साल की उम्र में लिखना आरंभ करने वाले रवींद्रनाथ टैगोर ने 1920 में भावनगर, गुजरात में आयोजित छठे गुजराती साहित्य परिषद में गाँधी जी के आग्रह पर बतौर अध्यक्ष अपना पहला भाषण हिंदी में दिया। विश्व के किसी भी लेखक की तुलना में रवींद्रनाथ टैगोर वह पहले साहित्यकार थे, जिन्होंने भारतीय साहित्य की गरिमा को अपनी महान रचनाओं के माध्यम से विश्व-मंच के व्यापक पटल पर सम्मानजनक तरीके से स्थापित किया।

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सदस्य श्री गोविन्द राजू ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। द्वीपों के जाने-माने बंगला साहित्य के रचनाकार और 'वाक्-प्रतिमा' के संपादक इस अवसर पर विशिष्ट सम्माननीय अतिथि थे।

कार्यक्रम में रवींद्र-संगीत, कहानी, कविता, गीतांजलि पर श्रीप्रकाश की पेंटिंग तथा रक्त कोरणी (लाल कनेर) नाटक के अंश प्रस्तुत किए गए। इसे अंडमान पीपुल थिएटर एसोसिएशन (आप्टा) के निदेशक श्री नरेश चंद्र लाल ने प्रस्तुत किया। श्री निमोय चंद्र बनर्जी ने धन्यवाद दिया। ••

श्री नरेश चंद्र लाल, निदेशक (आप्टा), पोर्टब्लेयर,अंडमान-निकोबार द्वीप समूह

हिंदी का लोक वैविध्यपूर्ण व रचनात्मकता से भरा है

विभूति नारायण राय

उद्‌घाटन वक्तव्य देते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विभूति नारायण राय

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में 'हिंदी का लोक' पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी में 'लोक भाषा और मानक भाषा का अंतर्संबंध एवं अंतर्द्वंद्व','लोक का साहित्य और साहित्य का लोक', 'प्रदर्शनकारी लोककलाएँ और आज का समय', 'लोक की प्रतिरोधी चेतना और आज का समय' विषय पर आयोजित सत्रों में देशभर से आए हिंदी लोक चिंतकों ने विचार विमर्श किया।

उद्‌घाटन वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि भोजपुरी, अवधी, मैथिली, ब्रज आदि बोलियों से हिंदी समृद्ध होती है। इन बोलियों से हिंदी ऊर्जा ग्रहण करती है, साथ ही ये बोलियाँ हिंदी के लिए खाद की तरह काम करती हैं। हिंदी का लोक वैविध्यपूर्ण व रचनात्मकता से भरापूरा संसार है। हिंदी का लोक से प्रतिरोध की चेतना प्रदर्शित होती है जो कि शोषण के खिलाफ़ खड़ा दिखाई पड़ता है। उन्होंने कहा कि लोक कला के बोल कुछ ही दूरी पर बदल जाते हैं पर उनका कथ्य प्रतिरोध की चेतना को साकार करती दिखाई पड़ती है। कबीर की रचनाओं की मूल चेतना वर्णव्यवस्था के खिलाफ़ तथा कर्मकांडों के खिलाफ़ खड़ी दिखती है। आज हिंदी को खंडित करने की कोशिश नहीं की जानी चाहिए क्योंकि हिंदी में लोकतांत्रिक चेतना निहित है। हमें हिंदी के पक्ष में खड़ा होने की ज़रूरत है, हम अवधी, छत्तीसगढ़ी का विरोध नहीं करते, ये तो हिंदी के लिए खाद की तरह काम करती हैं।

प्रमुख वक्ता के रूप में मध्यप्रदेश कला अकादमी के कपिल तिवारी ने कहा कि हिंदी के साथ 35 जनपदीय भाषाएँ सहयात्रा कर रही हैं, यही हिंदी की संस्कृति है। आज भी हम वैचारिकता के लिए पश्चिम की दृष्टि से देखते हैं, यह कहाँ तक उचित है? हिंदी के लिए 35 जनपदीय भाषाओं का शब्द संकलन करें तो हिंदी विश्व की समृद्धतम भाषा होगी। जनपदीय भाषाओं के शब्दों को समाहित करने से हिंदी में पचास लाख शब्दों की भाषा होगी।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. अमरनाथ ने कहा कि इतने वर्षों के बाद भी हिंदी भाषा ज्ञान की भाषा नहीं बन पाई। हमें सोचना पड़ेगा कि साम्राज्यवादी और भूमंडलीकरण की ताकतों के साथ अंग्रेज़ी हमपर किस कदर हावी है। 'हिंदी का लोक' की प्रस्तावना रखते हुए विशेष कर्तव्याधिकारी राकेश ने कहा कि आज भारत के विकास के मॉडल पर चर्चा हो रही है, साथ में यह भी कहा जा रहा है कि औद्योगिकीकरण के साथ महाकाव्यात्मकता समाप्त हुई है। आज गाँव भी शहर की नकल कर रहा है, लोक कलाएँ भी बदल रही हैं। लोक कलाकारों की ऊर्जा की अनदेखी हो रही है। गाँधी के नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय में 'हिंदी का लोक' पर आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्वानों के बीच हिंदी के विस्तृत लोक कला व परंपरा पर चिंतन मनन किया गया।

'लोक भाषा और मानक भाषा का अंतर्संबंध एवं अंतर्द्वंद्व' विषय पर आयोजित सत्र में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव श्री अरुणेश नीरन ने प्रमुख वक्ता के रूप में कहा कि आज हम 'हिंदी का लोक' पर विमर्श कर रहे हैं जबकि हिंदी का कोई क्षेत्र ही नहीं है। अगर हम भारतीय हैं तो हमारा गौरव व पहचान का माध्यम हिंदी ही है। हम भाषाई एकात्मकता की बात करते हैं, हिंदुस्तान के सौंदर्य का कारण भाषाई विविधता भी है। हिंदी जन-जन की भाषा है। भाषा कभी भी दास नहीं हो सकती है। जनभाषा सरकार की भाषा नहीं हो सकती। भाषा और बोली को अलग करके देखना कहाँ तक उचित है? हमें तो बोलियों को साथ लेकर चलने की ज़रूरत है।

मंच पर बाएँ से राकेश मिश्र, विशेष कर्तव्याधिकारी राकेश, कुलपति विभूति नारायण राय, कवि आलोक धन्वा, प्रो. अमरनाथ तथा वक्तव्य देते हुए,कपिल तिवारी

अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के अनुवाद विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. आत्म प्रकाश श्रीवास्तव ने कहा कि मानकीकरण किसी भाषा को क्षेत्रीयता से मुक्त करता है। यह क्षेत्रीयता सांस्कृतिक तौर पर क्षेत्र विशेष से विस्तारित होते हुए आगे बढ़ती है। मानकीकरण एक लचीली संकल्पना है। कोई भी मानकीकरण अंतिम नहीं होता। किसी भाषा का मानकीकरण रुकता है तो वह भाषा विस्तारित नहीं हो पाती है। उन्होंने लोक भाषा, शास्त्र भाषा, साहित्य भाषा को व्याख्यायित करते हुए कहा कि लोक भाषा सामान्य जन की भाषा होती है, हरेक भाषा को विस्तारित करने के लिए शास्त्र भाषा तलाशती है तथा संवेदना और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए साहित्य भाषा की ज़रूरत होती है। भाषा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. उमाशंकर उपाध्याय ने ऐतिहासिकता, जीवंतता और स्वायत्तता को मानक भाषा का लक्षण बताते हुए कहा कि भाषा और बोलियों के बीच बोधगम्यता होनी चाहिए।

प्रो. राज नारायण पाठक ने लोक भाषा और मानक भाषा के अंतर्संबंधों को उल्लेखित करते हुए कहा कि मानक भाषा बड़े समाज की भाषा होती है। मानक भाषा गंगा नदी के समान है और लोक भाषाएँ इसकी सहायक नदियाँ हैं। मानक भाषा में लोक भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हिंदी की मानक भाषा के आधार तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज शब्द हैं।

'लोक का साहित्य और साहित्य का लोक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ के

अधिष्ठाता प्रो. सूरज पालीवाल ने कहा कि हिंदी में लोक साहित्य को आज हमने जिस तरीके से दोयम दर्जे का मान लिया है उससे लोक में फैली हुई विपुल साहित्यिक संपत्ति का नुकसान हो रहा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लोक में विद्यमान साहित्य को उठाकर उसका मूल्यांकन किया और उसे साहित्यिक श्रेणी में रखा। यदि हम लोक साहित्य को हिंदी साहित्य से अलग करते हैं तो हिंदी

लकड़ी से बनी सुंदर आकृति को निहारते हुए आलोक धन्वा, विभूति नारायण राय व अन्य महानुभाव

साहित्य का आदिकाल पूरा का पूरा खारिज हो जाता है, इसलिए आवश्यक है कि लोक में स्थित साहित्य को हमें उसकी गुणवत्ता के आधार पर मुल्यांकन करना चाहिए। लोक बहुत ही समृद्ध होता है इसलिए उसका साहित्य भी प्रतिरोध से भरा हुआ तथा चेतना से संपन्न होता है।

प्रमुख वक्ता के रूप में छपरा विश्वविद्यालय के डॉ. लालबाबू यादव ने कहा कि वर्तमान समाज में भी लोक साहित्य की प्रासंगिकता बनी हुई है, लोक साहित्य के विपुल भंडार की अमूल्य कृतियाँ आज भी प्रकाशन की प्रतीक्षा कर रही हैं। अगर वाचिक एवं पांडुलिपि रूप में बिखरी पड़ी सामग्रियों का संकलन किया जाए तो हिंदी साहित्य के भंडार में वृद्धि होगी। भोजपुरी के लोक कलाकार भिखारी ठाकुर भोजपुरी क्षेत्र में पुनर्जागरण के प्रतीक थे। भिखारी ठाकुर एवं महेन्दर मिसिर ने विशाल भोजपुरी क्षेत्र में लोक चेतना को जागृत किया। आज हमें लोक साहित्य को सहेजने की ज़रूरत है।

कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. अमरनाथ ने कहा कि इस समय हिंदी की कई बोलियाँ संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने की माँग कर रही हैं। वास्तव में हिंदी इस देश की राजभाषा इसलिए है कि उसके बोलनेवालों की संख्या सबसे ज़्यादा लगभग 46 करोड़ है। यदि हिंदी की अन्य बोलियों को मैथिलि की तरह आठवीं अनुसूची में शामिल कर दिया गया तो उक्त बोलियाँ बोलने वाले लोग हिंदी भाषी नहीं माने जाएँगे और आनेवाली जनगणना में हिंदी भाषियों की संख्याबल की ताकत अचानक घट जाएगी और तब अंग्रेज़ी की वकालत करनेवालों का पक्ष अधिक मज़बूत होगा। इतना ही नहीं, हिंदी साहित्य का इतिहास जिसमें अवधी के तुलसी, ब्रज के सुर, मैथिली के विद्यापति, राजस्थानी के चंदवरदाई आदि शामिल हैं, उनका क्या होगा? क्या खड़ी बोली हिंदी का साहित्य ही हिंदी का सहित्य होगा? हमें इस गंभीर समस्या पर विचार करना होगा और संस्कृतिकर्मी होने के कारण अपना पक्ष सुनिश्चित करना होगा।

'लोक की प्रतिरोधी चेतना और आज का समय' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में गरीबी, प्रदर्शन ड्राइंग रूम की शोभा की वस्तु बन गई है। कविता, कहानियाँ मनोरंजन से आगे नहीं बढ़ रही हैं। मुद्दों से भटकाने का लगातार प्रयास जारी है जिसमें सरकार तो लगी ही है, हम भी लगे हैं। संचारतंत्र पूरी ताकत के साथ हममें भ्रम पैदा कर रहा है। संबंधों में कमी के कारण ही सामुदायिक जीवन समाप्त होता जा रहा है। आज का यह संकट वैश्विक है। वैश्विक पूँजीवादी शक्तियाँ राजनीति के साये में जड़ फैला चुकी हैं। युवा वर्ग इंटरनेट की दुनियाँ में सूचनाओं में ज्ञान ढूँढ़ रहा है। वर्तमान सूचनातंत्र विश्वविद्यालय लोक की नज़र में अपना औचित्य खो चुकी है। लोक के प्रतिरोध में आ रहे भटकाव के बारे में हमें सोचने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि आज़ादी के पहले हमारी लड़ाई साम्राज्यवादियों से थी पर आज दुश्मन दिखता नहीं है, वह हमारे भीतर बैठा है। उन्होंने गांधीजी के वक्तव्यों के हवाले से कहा कि जब देश आज़ाद होगा तो नागरिक शक्ति और सैन्य शक्ति में संघर्ष अवश्यंभावी है। अगर नागरिक शक्ति कमज़ोर पड़ी तो सैनिक तानाशाही आएगी इसलिए नागरिक शक्ति को बढ़ने के लिए लोक पर मंडरा रहे खतरे के बारे में हमें सोचना होगा।

हरिओम राजौरिया ने लोक पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि लोक कलाकारों की ताकत व आत्मबल गाँवों में टूट रही हैं। लोक कला को बचाने के लिए हमें अपने स्तर पर प्रयास करने की ज़रूरत है न कि किसी सत्ता प्रतिष्ठानों पर निर्भर रहने की ज़रूरत है, क्योंकि सत्ता प्रतिष्ठानों का स्वभाव मेले और ठेले में सिमटकर रह गया है। बाज़ारवादी ताकत इसी खयाल में रहती है कि कैसे लोक को बाज़ार में बेचा जाए? भारतीय फिल्म संस्थान, पुणे के निदेशक पंकज राग ने लोकचेतना के लिए 1857 के विद्रोह को सबसे सटीक बताते हुए कहा कि उस समय जीवनशैली के साथ ही जीवन का संघर्ष शुरू हुआ था। उन्होंने 1857 ई. के विद्रोह के दौरान हुए लूट का ज़िक्र करते हुए कहा कि लूटपाट उन्हीं लोगों की हो रही थी जिन्होंने औपनिवेशिक सत्ता से कुछ प्रप्त किया था। लोक गीतों में लूट के लिए उल्लास के भाव होते थे। आज फिर से नव

उपनिवेशवादी शक्तियाँ हम पर हावी होती जा रही हैं। प्रतिरोध को समाप्त करने की पुरजोर कोशिश की जा रही है, इसपर हमें गंभीरतापूर्वक सोचना होगा। साहित्यकार डॉ. बसंत त्रिपाठी ने कहा कि लोक के लिए आज बातचीत और विचार की जगह हस्तक्षेप की ज़रूरत है। यह हस्तक्षेप लोक में जाकर की जानी चाहिए।

सत्र का संचालन करते हुए डॉ. संतोष भदौरिया ने कहा कि आज की बाज़ारवादी शक्तियों के बीच में मनुष्य बने रहने का संकट पैदा हो गया है। वर्धा की धरती से ही 'करो या मरो' का नारा दिया गया था। उनके नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय हमें मनुष्य बने रहने और दूसरों को भी मनुष्य बनने की प्रेरणा देते रहें, को संकल्पित कराती हैं। सत्र के गौरान विश्वविद्यालय के शोधार्थी कमलेश यादव, मुन्नालाल गुप्ता, शंभुनाथ मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किए।••

•अमित कुमार विश्वास, पीएच. डी शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ।

अमेरिका में 25वाँ हिंदी कवि सम्मेलन

लोगों को हँसाते हुए महेंद्र अजनबी

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति (अमेरिका) के कवि सम्मेलनों की श्रृंखला का आरंभ 9 अप्रैल, 2010 को डैलस से हुआ । उत्तरी अमेरिका में यह संस्था प्रत्येक वर्ष तकरीबन पंद्रह से सत्रह कार्यक्रम करवाती है। डॉ. नंदलाल सिंह, डॉ. सुधा ओम ढींगरा और श्री आलोक मिश्र इस संस्था के आधार स्तंभ हैं ।इन्हीं के अथक प्रयास से इस बार भी कवि सम्मेलनों के सोलह कार्यक्रम विभिन्न शहरों में संपन्न हुए ।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के तत्वावधान में प्रस्तुत हास्य कवि सम्मेलन में भारत के बहुचर्चित हास्य कवि श्री महेंद्र अजनबी, श्री आश करण अटल और श्री अरुण जेमिनी ने भाग लिया । डैलस में आयोजित यह 25वाँ कवि सम्मेलन था । आज के इस फिल्मी युग में जब 700 से भी ज्यादा लोग कवि सम्मेलन का आनंद लेते हैं तो मन असीम आनंद से भर जाता है । इसका पूरा श्रेय नंदलाल जी को जाता है । आज से 25 साल पहले इसका प्रारंभ हुआ था, तब कुछ लोग ही ऐसे कार्यक्रमों में आते थे, पर धीरे-धीरे लोग आते गए और कारवाँ बनता गया और आज ये कारवाँ काव्यप्रेमियों के जत्थे में परिवर्तित हो चुका है । नंदलाल जी के शब्दों में ''आज कवि सम्मेलन का रजत जयंती समारोह है। डैलस में दिसंबर 1985 में प्रथम कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था।" इस कवि सम्मेलन का संचालन श्री अरुण जेमिनी ने किया ।काव्य पाठ के लिए सर्वप्रथम उन्होंने महेंद्र अजनबी को मंच पर आमंत्रित किया ।

महेंद्र अजनबी ने बच्चों की बातों को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया ।उनकी बातें सुनकर हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गए । ट्रेन की भीड़ पर सुनाई गईं उनकी हास्य व्यंग्य की कविता खूब सराही गई...

ट्रेन में इतनी भीड़ थी भाई
कि हाथ को मुँह भी नहीं देता था दिखाई
एक आदमी ने बीड़ी सुलगाई
और मेरे मुँह में लगाई

उस के बाद अरुण जेमिनी ने आश करण अटल जी को मंच पर ये कहते हुए बुलाया कि इनके नाम को लिखने में हमेशा गलती हुई है, इन के नाम में आशा भोंसले वाला आश है, कुंभकर्ण वाला करण है, और अटल बिहारी बाजपेई वाला अटल है.. तीन-तीन नामों का सम्मिश्रण हैं।

मिडिया पर सुनाई उनकी कविता ने सभी का मन मोह लिया...

क्या उनको पता था कि
अंतिम साँस लेने के बाद वो मर जाएंगे ...
जी पता था ...
जब उनको पता था कि
अंतिम साँस लेने के बाद वो मर जाएंगे तो
उन्होंने अंतिम साँस क्यों ली?
जी राष्ट्रहित में...

संयोजक नंदलाल और संचालक कवि अरुण जैमिनी

उसके बाद उन्होंने अपनी कविता 'क्या हमारे पूर्वज बंदर थे' सुनाई। यह कविता राजस्थान में कक्षा-11की पाठ्य-पुस्तक में पढ़ाई जाती है। अरुण जेमिनी ने हँसीवर्षा के इस क्रम को जारी रखा। उनके हरयाणवी अंदाज ने कविता को और भी मनोरंजक बना दिया।

एक आदमी कुत्ते को घुमा रहा था।
दूसरे ने पूछा---
ताऊ कुत्ते को घुमारिया है के,
ताऊ ने कहा-

कविता सुनाते आश करण अटल

नहीं ये तो ऊंट है
कद छोटा रह गया है ...

अरुण जेमिनी जी की कविता '21वीं सदी में ढूँढ़ते रह जाओगे' ने हास्य के साथ -साथ लोगों को सोचने पर भी विवश कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति ने हिंदी का नन्हा-सा दीया जलाया था, वो आज सूरज बन चमक रहा था। इसका भान इसी बात से हो रहा था कि आज 700 से भी अधिक लोग इस हास्य कवि सम्मेलन का आनंद लेने के लिए एकत्रित थे। लगातार तीन घंटे से अधिक चले इस कवि सम्मेलन में हँसते-हँसते लोगों के पेट में बल पड़ गए। जीवन की आपाधापी में हम हँसना लगभग भूल ही गए हैं, इस तरह के आयोजन हमें जीने की नई ऊर्जा देते हैं। कुछ लोगों के अनुसार तो वो आज जितना हँसे हैं, उतना जीवन में शायद ही कभी हँसे हों।

हँसते-मुस्कराते श्रोतागण

उनका ये भी कहना था कि बड़े-बड़े कॉन्सर्ट में जाने से अच्छा है कि कवि सम्मेलनों में जाया जाए। मिडलैंड और ह्यूस्टन के कार्यक्रम भी सराहनीय रहे। ये कार्यक्रम 9 मई, 2010 तक चले।

इन कवि सम्मेलनों में जब हिंदी प्रेमी जब एक छत तले इकट्ठे होते हैं तो अमेरिका में भी भारत बसा महसूस होता है। चारों तरफ देश की महक फैली महसूस होती है।..

प्रस्तुति :रचना श्रीवास्तव, अमेरिका।

ग्लोबलाइज्ड अर्थव्यवस्था में हिंदी

6 मई, 2010 को केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के राजभाषा प्रभाग के तत्वावधान में आयकर निदेशालय के अंतर्गत भारत में कार्यरत हिंदी अनुवादकों के लिए 'आयकर शिखर', हैदराबाद में आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय सेमिनार के दूसरे दिन विशेष वक्ता के रूप में पधारे प्रो. ऋषभ देव शर्मा ने 'ग्लोबलाइज्ड अर्थव्यवस्था में हिंदी की भूमिका' विषय पर व्याख्यान दिया।

अतिथि व्याख्याता प्रो. ऋषभ देव शर्मा ने विस्तार से यह स्पष्ट किया कि ग्लोबलाइज्ड अर्थव्यवस्था में भारत केवल दुनिया भर के माल की खपत के लिए मंडी ही न रहकर उत्पादक और विक्रेता के रूप में भी उभर रहा है।

उन्होंने वैश्विक कारोबार, सूचना प्रौद्योगिकी और बाज़ार की दृष्टि से हिंदी की आवश्यकता और क्षमता के बारे में बताते हुए आगे यह भी कहा कि कंप्यूटर और मोबाइल का जितना प्रसार होगा तथा आर्थिक विकास जितनी जल्दी गाँवों को लक्षित करेगा, हिंदी सहित भारत की सभी स्थानीय भाषाओं के लिए उतना ही अनुकूल माहौल बनेगा क्योंकि गाँवों तक व्यवसाय इन्हीं भाषाओं के माध्यम से प्रसारित हो सकता है।

आरंभ में आयकर निदेशालय के राजभाषा अधिकारी आर. के. शुक्ल ने प्रो. शर्मा का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया।

सुश्री साहू के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संगोष्ठी संपन्न हुई।..

साभार : hindi-khabar.hindyugm.com

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन और राष्ट्र को चुनौतियाँ विषयक संगोष्ठी

बाएँ से श्री वी.एन शुक्ल, डॉ. जे.एन कौशिक, सुश्री सुरेंदर सैनी, श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी, डॉ. पूरनचंद टंडन और व्याख्यान देते हुए प्रो. गोस्वामी

भारत में राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के गठन से अनुवाद के क्षेत्र का विस्तार किस प्रकार किया जाए जिससे अंतर्राष्ट्रीय साहित्य भारतीय जन-जन तक पहुँच सके, इस बात को ध्यान में रखते हुए नई दिल्ली सांध्यकालीन हिंदी संस्थान द्वारा भारतीय विद्या भवन, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली में डॉ. नगेंद्र स्मृति साहित्यिक संगोष्ठी तथा संस्थान द्वारा संचालित अनुवाद पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए प्रमाणपत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया ।

सुविख्यात भाषाविज्ञानी, संस्थान के निदेशक और हिंदी भाषा के विद्वान प्रो.कृष्ण कुमार गोस्वामी ने प्रारंभ में बीज भाषण दिया । प्रो. गोस्वामी ने अपने वक्तव्य में बताया कि राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की स्थापना प्रधानमंत्री की प्रेरणा से और राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के प्रयास से सन् 2006 में हुई थी । इस मिशन का प्रमुख उद्देश्य भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान आधारित साहित्य को अनुवाद द्वारा जन-जन तक पहुँचाना है। उच्च स्तरीय कोश, थिसारिस आदि अनुवाद उपकरणों और कंप्यूटर सॉफ्टवेयरों का उत्पादन करना है। अनुवाद की गुणवत्ता की वृद्धि के लिए लघु अवधीय नवीकरण पाठ्यक्रम तथा शोध परियोजनाओं से अनुवाद संबंधी शिक्षा प्रदान करनी है ।

इसी संदर्भ में प्रो. गोस्वामी ने ये प्रश्न उठाए कि क्या उच्च शिक्षा के सत्तर मुख्य विषयों का उच्च स्तरीय अनुवाद समय पर हो पाएगा ? यदि हाँ, तो क्या-क्या मानदंड अपनाए जाएँगे ? भारतीय और विश्व की क्लासिकल कृतियों के अनुवाद का चयन किन आधारों पर किया जाएगा ? इसमें पुनरावृत्ति की आशंका तो नहीं होगी । क्या अनुवाद मिशन द्वारा निर्धारित 73 करोड़ 90 लाख रुपए का बजट समय पर खर्च हो पाएगा और हुआ भी तो, कितना कार्य होगा और वह कितना लाभकारी, उपयोगी तथा शीघ्र हो पाएगा ? क्या इसके लिए कोई रोडमैप बनाया गया है ? अनुसृजन की दृष्टि से क्या यह अनुवाद मूल पाठ लग पाएगा । मशीनी अनुवाद कब तक विकसित हो पाएँगे और उनके कार्य में कितनी गुणवत्ता होगी । प्रो. गोस्वामी ने इस प्रकार के प्रश्न उठाकर अनुवाद मिशन की कार्य प्रणाली पर विचार व्यक्त किए ।

प्रगत संगणक विकास केंद्र (सी-डैक) नोएडा के निदेशक और कंप्यूटर वैज्ञानिक श्री वी.एन.शुक्ल ने बताया कि अंग्रेज़ी-हिंदी मशीनी अनुवाद का विकास पूरा हो चुका है और अंग्रेज़ी-पंजाबी, अंग्रेज़ी-उर्दू, अंग्रेज़ी-मलयालम मशीनी अनुवाद का विकास अब चल रहा है । इसके साथ भारतीय भाषाओं के परस्पर अनुवाद और मुख्यत : हिंदी से भारतीय भाषाओं के मशीनी अनुवाद विकसित किए जा रहे हैं । इसमें अधिकतर पर्यटन, स्वास्थ्य, प्रशासन संबंधी अनुवाद हो रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए मशीन आधारित अनुवाद के विकास के लिए प्रयासरत है । इस अनुवाद के मानव अनुवाद की अपेक्षा अत्यंत शीघ्र होने की संभावना है ।

साहित्य अकादमी के उप सचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं के अतिरिक्त कई ऐसी गैर-अनुसूचित भाषाएँ और बोलियाँ हैं, जिनका साहित्य काफ़ी स्तरीय है । इस पर प्रश्न उठाया जा सकता है कि इन भाषाओं में रचित साहित्य और लोक साहित्य की उपेक्षा क्यों की जा रही है ।

सुश्री सुरेंद्र सैनी द्वारा अध्यक्षीय भाषण

संगोष्ठी की अध्यक्ष सुश्री सुरेंद्र सैनी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में अनुवाद की उपयोगिता और सार्थकता पर अपने विचार प्रकट करते हुए यह आशा व्यक्त की कि अनुवाद मिशन से अनुवाद के क्षेत्र में काफ़ी वृद्धि होगी।

संस्थान के सचिव डॉ. जय नारायण कौशिक ने संस्थान का परिचय देते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया । अनुवाद पाठ्यक्रम के संयोजक डॉ. पूरनचंद टंडन ने संगोष्ठी और प्रामाण-पत्र वितरण समारोह का संचालन करते हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया ।..